जनवाचन आंदोलन

जनवाचन आंदोलन का मकसद है। किताबों को गाँव-गाँव ले जाना, इन किताबों को नवपाठकों के बीच पढ़कर सुनाना और पढ़वाकर सुनना। गाँव की जनता के पास आज भी पढ़ने-लिखने के लिए स्तरीय किताबें नहीं हैं और जो हैं भी वे बेहद महँगी हैं। भारत ज्ञान विज्ञान समिति ग्रामीण जन तक कम कीमत और सरल भाषा में देशभर के मशहूर लेखकों की किताबें पहुँचाना चाहती है, ताकि गाँव-गाँव में जन वाचन, पढ़ाई और पुस्तकालय संस्कृति पैदा हो सके। संपूर्ण साक्षरता अभियान से जो नवपाठक निकलकर सामने आए हैं, वे अपने साक्षरता के अर्जित कौशल को बनाए रख सकें, उनके सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना का स्तर बढ़े और वे जागरूक होकर अपने बुनियादी हकों की लड़ाई के लिए लामबंद हो सकें, यह इस अभियान का प्राथमिक उद्देश्य है। भारतीय लोकतंत्र की रक्षा के लिए गाँव के लोग आगे आएँ, इसके लिए भी इस तरह की चेतना का विकास जरूरी है। साक्षरता केवल अक्षर सीखने का काम नहीं है, यह पूरी दुनिया को जानने का काम है।

मूल्य : 2 रुपए

इंद्रा का हाथी

महेश दर्पण
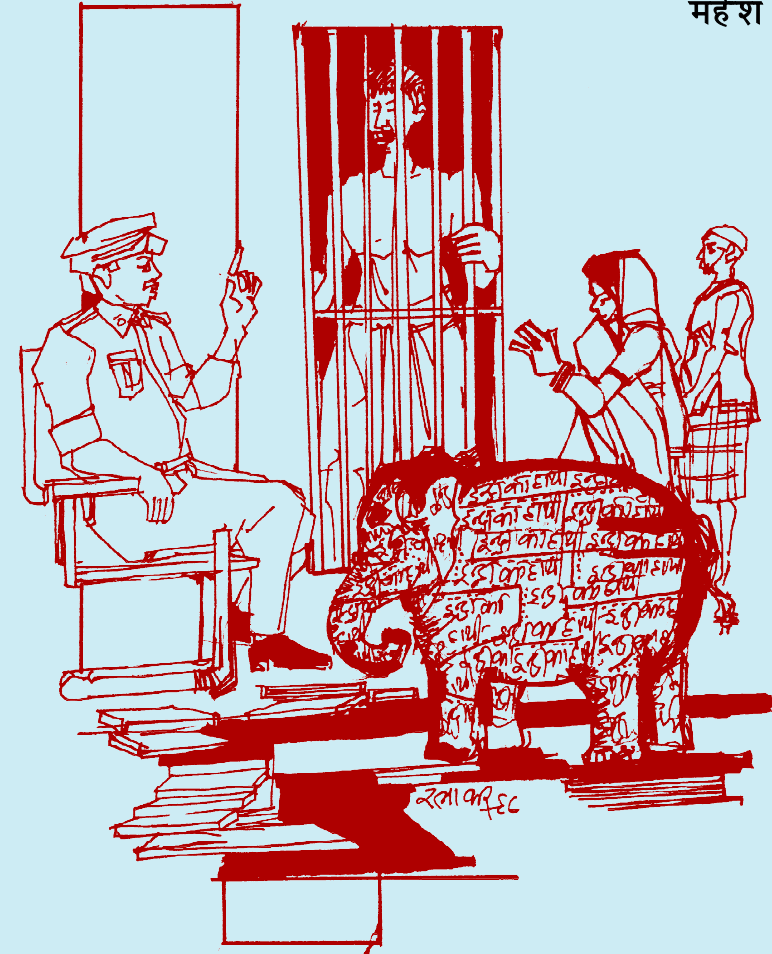
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

इंद्रा का हाथी : महेश दर्पण
Indra Ka Hathi : Mahesh Darpan

नवपाठकों के लिए भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

पुस्तकमाला संपादकः असद ज़ैदी और विष्णु नागर
कार्यकारी संपादकः संजय कुमार
Series Editor : Asad Zaidi and Vishnu Nagar
Executive Editor : Sanjay Kumar

रेखांकनः रत्नाकर
ग्राफिक्सः अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्षः 1996

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा देशभर में चलाए जा रहे जन वाचन आंदोलन के तहत किया गया है ताकि लोगों में पढ़ने-लिखने की आदत पैदा हो सके। इस अभियान का मु य उद्देश्य गांव के पाठकों को सस्ती और सरल भाषा में देश के मशहूर रचनाकर्मियों द्वारा लिखी गई उत्कृष्ट पुस्तकें उपल□ध करवाना है। खासकर उन नवपाठकों के लिए जो देशभर में चलाए गए संपूर्ण साक्षरता अभियान से निकलकर सामने आए हैं।

मूल्यः 2 रुपए

Published by ***Bharat Gyan Vigyan Samithi**, **Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110017, Phone : 011 - 6569943, Fax : 91 - 011 - 6569773,*** **email: bgvs@vsnl.net** ***Printed at Sun Shine Offset, Okhla phase 1, N.D. 20, Ph: 9811621678***

इंद्रा का हाथी

महेश दर्पण

इंद्रा का हाथी

पूरी रियासत में हरिया से अच्छा कोई लुहार न था। उसकी बनाई चीजें लोग हाथों-हाथ खरीद ले जाते।

एक दिन हरिया की पत्नी ने कहा, ''तुम लोगों के लिए चीज़ें बनाते हो। कभी अपने लिए भी कुछ बनाओ तो जानूँ।''

पत्नी की बात हरिया ने गांठ बाँध ली।

बहुत दिनों तक वह सोचता रहा कि क्या बनाया जाए! कभी वह सोचता लोहे का घोड़ा बनाया जाए तो कभी घड़ा।

एक के बाद एक हजारों चीजें बनाने की सोचते-सोचते वह तय ही न कर पाता कि बनाए तो क्या बनाए।

एक दिन वह मन बनाकर बैठ गया। उसने लोहे का हाथी बनाना शुरू किया। रात-दिन वह हाथी बनाने में लगा रहता।

इसी बीच कई ग्राहक आकर लौट गए। लोग अपनी पसंद की चीजें बनवाना चाहते पर वह साफ इनकार कर देता, ''देखो भई, जब

तक हाथी बन नहीं जाता, तब तक मैं और कुछ नहीं बनाऊँगा।''

लोग हैरान थे कि आखिर हरिया कैसा हाथी बनाने में लगा है। सभी हाथी को देखना चाहते पर हरिया कहता, ''अभी नहीं। '' पूरा बन जाने दो। तभी दिखाऊँगा।''

तीसरा महीना खत्म होते-होते हाथी तैयार हो गया। हरिया की

खुशी का कोई ठिकाना न था। वह दौड़ा–दौड़ा पत्नी के पास जा पहुँचा, ''तुम्हारे लिए अनोखा उपहार तैयार हो गया।''

पत्नी ने हाथी देखा तो वह खुशी से उछल पड़ी। उसने हरिया के हाथों को चूम लिया। इतना सुंदर उपहार उसे जीवन में अब तक नहीं मिला था।

थोड़ी देर में ही मुहल्ले भर में यह बात फैल गई।

अपने–अपने काम छोड़कर सभी हाथी देखने आ पहुँचे। जो देखता, हरिया की तारीफ करता।

हाथी था भी पूरे पाँच फुट का। उसकी सूंड में हरिया ने स्प्रिंग लगा दिया था। कोई जरा–सा छू देता, तो वह हिलने लगती। दूर से देखने पर वह सचमुच के हाथी का बच्चा लगता था।

शाम होते–होते सैकड़ों लोग हाथी को देख गए। हरिया बहुत खुश था। उसने पत्नी से कहा: ''यह हाथी हम किसी को नहीं देंगे। कोई पाँच हजार रुपये देगा, तब भी नहीं देंगे।''

हरिया ने हाथी को घर के बाहर सजा दिया। राह चलते लोग हाथी को देख कर खड़े हो जाते। बच्चों के लिए तो हाथी एक खिलौना ही बन गया था। कभी वे उसके पैरों के नीचे से निकल जाते तो कभी सूंड हिलाकर तालियाँ बजाने लगते।

हरिया के हाथी के खबर देखते–देखते हर जगह पहुँच गई।

शहर कोतवाल को पता लगा तो वह भी हाथी देखने को उतावला हो उठा। उसने सिपाही भेजकर हरिया को बुलवाया।

सिपाही को आया देख हरिया तो घबरा ही गया, पर उसकी पत्नी बोली, ''अरे कोतवाल ने बुलवाया है, चले जाओ। तुमने चोरी तो की नहीं जो वह तुम्हें बंद कर दे।''

डरते–डरते हरिया सिपाहियों के साथ कोतवाली चल दिया।

कोतवाल ने हरिया को आदर से बिठाया और बोला, ''सुना है तुमने बहुत सुंदर हाथी बनाया है।''

''जी सरकार।''

''हम उसे खरीदना चाहते हैं। बोलो □या कीमत लोगे ?''

यह सुनते ही हरिया का गला सूख गया। उसके मुँह से आवाज़ नहीं निकल रही थी। बड़ी मुश्किल से उसने कहा, ''वह

तो हमने अपने घर के लिए बनाया है। उसे बेचेंगे नहीं। हमने बड़े मन से पत्नी को उपहार में दिया है।''

कोतवाल गुस्से में लाल हो उठा, ''अच्छा, तेरी यह हि मत! हम कीमत देने को तैयार हैं, तब भी नहीं देगा। बड़ा आया पत्नी को उपहार देने वाला।'' गुस्से में, कोतवाल उठ खड़ा हुआ, ''सोच ले हरिया! हाथी तो हमें लेना ही है!''

मारे घबराहट के हरिया का बुरा हाल था। एक तरफ पत्नी की खुशी थी। दूसरी तरफ कोतवाल का डर था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे! आखिरकार उसने मन ही मन तय कर

लिया।

हिम्मत बटोरकर वह कोतवाल से बोला, ''आप कहें, तो आपके लिए दूसरा हाथी बना दूँ।''

यह सुनते ही कोतवाल गुस्से से काँपने लगा। उसने सिपाहियों को हुक्म दिया: ''हरिया को हवालात में बंद कर दो! हाथी आ जाए, तो इसे छोड़ देना।''

उधर हरिया की पत्नी, पति के घर पर न लौटने से परेशान थी। शाम घिर आयी तो उसे घबराहट होने लगी। उसने पड़ोस के इब्राहीम काका से कहा।

इब्राहीम काका ने शिवदास को बताया। शिवदास ने अब्दुल को बुलवाया। अब्दुल दौड़ता-भागता कोतवाली गया।

हरिया को बंद हुआ देख अब्दुल बड़ा दुखी हुआ। उसने हरिया को ढांढस बंधाया और उलटे पाँव हरिया की पत्नी के पास लौट आया।

हरिया की पत्नी बड़ी समझदार औरत थी। उसने दूसरे दिन सुबह अब्दुल के साथ कोतवाली जाना तय कर लिया।

काफी देर तक वह सोचती रही कि क्या तरकीब अपनाई जाए। उसका मन था कि हाथी भी अपने पास रहेऔर हरिया भी छूट जाय। सोचते-सोचते उसे नींद आ गई। थोड़ी देर बाद उसे लगा, कोई आवाज दे रहा है: इंद्रा ......ओ इंद्रा!''

उसने आवाज को गौर से सुना। अरे, यह तो उसके रघुबर चाचा की आवाज है। वह फौरन उठ बैठी।

सामने रघुबर चाचा खड़े थे। उसने झट उनके पैर छुए। रघुबर चाचा ने आर्शीवाद दिया और पूछा: ''तू ठीक-ठाक तो है न बेटी!''

चाचा, ठीक तो हूँ, लेकिन एक मुसीबत आ गई है। कोतवाल साहब ने हरिया को बंद कर दिया है। वह उसका बनाया हाथी लेना चाहते हैं। हरिया भला वह हाथी कैसे दे सकता है। वह तो उसने मेरे लिए बनाया है।''

सारा किस्सा सुनकर चाचा बोले: ''तू फिक्र मत कर बेटी। बस यह बता, कोतवाल ने खुद हाथी को देखा है या नहीं।''

''खुद तो उसने नहीं देखा है चाचा।''

''बस फिर ठीक है। अब यह बता, मैंने तुझे अपना नाम

लिखना सिखाया था। लिखना याद है कि नहीं ?''

हरिया की पत्नी ने फौरन झाड़ू की सींक तोड़ जमीन पर लिखकर दिखाया– ''इंद्रा''

चाचा ने उसे शाबाशी देते हुए कहा: ''बस हो गया काम! तू बड़ी होशियार लड़की है। आज मैं तुझे तीन शब्दों का एक वाक्य लिखना सिखाऊँगा।''

चाचा ने झाडू की सींक से मिट्टी के फर्श पर लिखा–''इंद्रा का हाथी।''

हरिया की पत्नी ने पढ़ा – ''इंद्रा ......'' इसके आगे उसकी समझ में कुछ न आया।

शादी से पहले रघुबर चाचा ने उसे सिर्फ नाम लिखना सिखाया था। उसने चाचा से पूछा: ''चाचा इसके आगे क्या लिखा है ?'' चाचा ने बताया: ''इसके आगे लिखा है : ''का हाथी''

पूरा हुआ: ''इंद्रा का हाथी'' मतलब तेरा हाथी।''

''हाँ–हाँ चाचा। यह मेरा हाथी है।''

''वह तो ठीक है, लेकिन अब यही इबारत इस हाथी पर कई जगह लिख दे। बस, फिर समझ ले कोतवाल हार गया।''

हरिया की पत्नी ने झाडू की सींक उठाई और जमीन पर लिखने लगी: ''इंद्रा का हाथी''। अपने लिखे को उसने रघुबर चाचा के लिखे से मिलाया। अरे, यह तो बिल्कुल वैसा ही है। वह खुशी से चिल्ला पड़ी, ''देखो चाचा, देखो, मैंने सही लिखा है न।''

लेकिन यह क्या, चाचा तो कहीं नज़र नहीं आ रहे। हड़बडाहट में उसकी आँखे खुल गईं।

तो क्या वह सपना देख रही थी!

सपने में चाचा ने उसे यह अच्छी तरकीब सुझाई। उसने
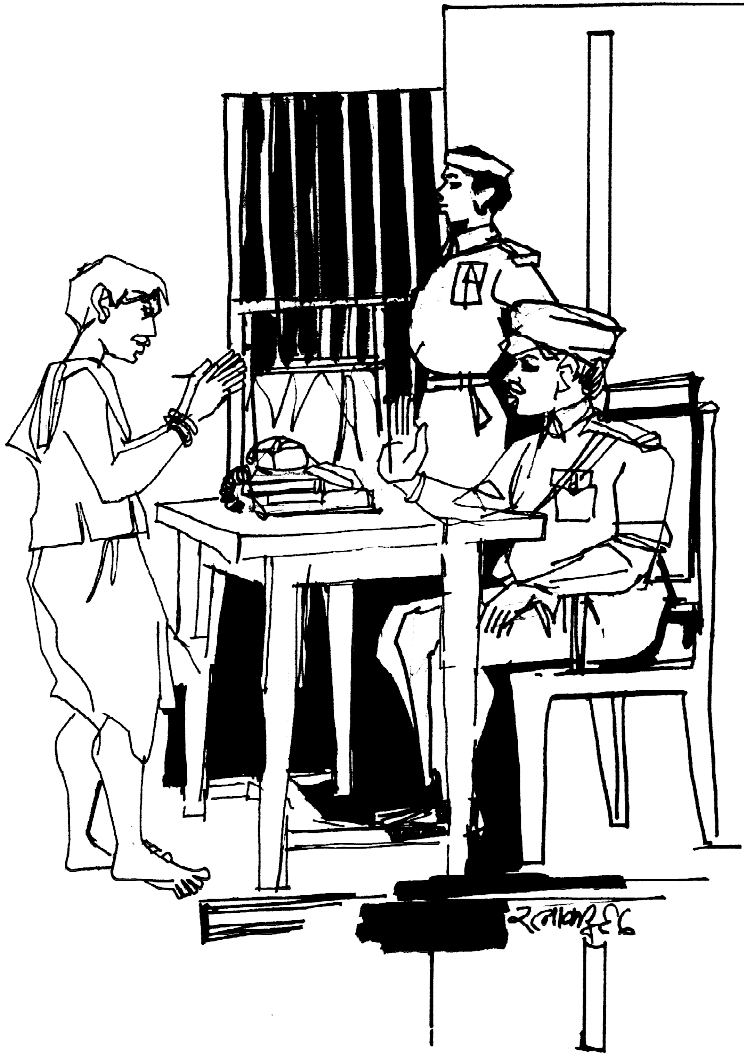
ढिबरी की रोशनी तेज की और पीली मिट्टी का टुकड़ा उठा कर हाथी पर लिखना शुरू किया:''इंद्रा का हाथी।'' उसने गौर से पढ़ा– ''इंद्रा का हाथी' । वह खुशी से नाच उठी। एक, दो, तीन, चार ..... कई जगह उसने लिख: 'इंद्रा का हाथी'। देखते–देखते हाथी का पूरा शरीर उसकी लिखावट से भर गया। अब वह हाथी

सचमुच उसका हो गया था।

देखते–देखते एक दो जगह उसका हाथ लग गया तो उसका लिखा मिट गया। 'इसे तो कोई भी मिटा देगा। अब □या किया जाए ? उसने अपने आप से पूछा।

तभी उसे एक तरकीब सूझी। उसने हथौड़ा और बड़ी कील उठा ली। अपने लिखे पर वह कील से ठोक–ठोक कर खुदाई करने लगी। देखते–देखते हाथी के पूरे शरीर पर हर जगह खुद गया– ''इंद्रा का हाथी''......''इंद्रा का हाथी'' उसने कपड़े से हाथी का शरीर पोंछ डाला। मिट्टी झड़ गई और कील के खुदे अक्षर चमक उठे – ''इंद्रा का हाथी''।

सुबह होते ही अब्दुल आ पहुँचा, ''चलो चाची, कोतवाली चलना है कि नहीं!''

''हाँ–हाँ अब्दुल, चलो।''

जब तक वह सोच चुकी थी कि कोतवाल साहब से उसे क्या कहना है! हाथी को बैलगाड़ी पर लदवा कर वह कोतवाली ले गई।

कोतवाल को जैसे ही पता चला कि हरिया की पत्नी हाथी लेकर आ पहुँची है, वह बड़ा खुश हुआ। उसने फौरन हरिया को रिहा करने का हुक्म दे दिया।

बैलगाड़ी से उतार कर हाथी कोतवाल के पास पहुँचाया गया। कोतवाल को हाथी बहुत पसंद आया। उसने पास जाकर देखा। हाथी के शरीर पर हर जगह 'इंद्रा का हाथी' खुदा हुआ देखकर उसने पूछा, ''अरे हरिया, यह तुमने क्या किया? इंद्रा कौन है ?''

हरिया जवाब देता है, इससे पहले ही हरिया की पत्नी बोल

पड़ी, ''इंद्रा मैं हूँ। यह हाथी हरिया ने मेरे लिए बनाया था न! इसीलिए उसने हाथी पर मेरा नाम खोद डाला। आपको हाथी पसंद है तो रख लीजिए! मेरे लिए तो हरिया एक और हाथी बना देगा।''

कोतवाल सोच में पड़ गया। हाथी को लेता है, तो देखने वाले जरूर यह पूछेंगे कि इंद्रा का हाथी तुमने क्यों ले लिया! अपने लिए नया हाथी क्यों नहीं बनवाया? आखिर वह किस-किस को जवाब देता रहेगा!''

हरिया भी हैरान था कि रात भर में उसकी पत्नी ने यह कैसा चमत्कार कर डाला।

कोतवाल को खामोश देखकर हरिया की पत्नी ने पूछा, ''तो अब हम जाएं साहब? हाथी आप रख लें और हमारे हरिया को हमारे साथ भेज दें।''

कोतवाल बोला, ''इंद्रा, तुम अपना हाथी भी साथ ले जाओ। हरिया से हमारे लिए ऐसा ही दूसरा हाथी बनवा दो। बन जाए तो खबर करवा देना। हमारे आदमी मेहनताना देकर ले जाएँगे।''

हरिया, उसकी पत्नी और अब्दुल हाथी को लेकर खुशी-खुशी अपने गाँव लौट आए।

घर पहुँचते ही हरिया बोला, ''इंद्रा, अगर तू लिखना-पढ़ना न जानती होती, तो यह हाथी आज हाथ से निकल गया होता।''

***